ISSN 0975-4083

रिसर्च जरनल ऑफ आर्ट्स मैनेजमेन्ट एण्ड सोशल साइन्सेस

Peer-Reviewed Research Journal
UGC Journal No. (Old) 2138 Impact Factor 4.875 (IIFS)
Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory
ProQuest, U.S.A. Title Id : 715204

अंक - 22, हिन्दी संस्करण, वर्ष-11, अक्टूबर-मार्च 2022

Centre for Research Studies
REWA (M.P.)

2022

www.researchjournal.in

PRINCIPAL
Ramchandi College Saraipali
Bagajjori Mahasamund (C.G.

अनुक्रमणिका

01.	महिला पुलिस की पारिवारिक एवं सामाजिक प्रस्थिति (रीवा संभाग के विशेष संदर्भ में समाजशास्त्रीय अध्ययन) **अखिलेश शुक्ला, प्रियंका तिवारी**	09
02	भारतीय ग्रामीण समाज में जजमानी व्यवस्था का महत्व: एक समाजशास्त्रीय अध्ययन **मीरा कुमारी**	20
03	शिक्षित एवं अशिक्षित कामकाजी महिलाओं के आत्मविश्वास का तुलनात्मक अध्ययन (रीवा नगर के विशेष संदर्भ में) **शशांक पाण्डेय, प्रीतम सिंह, किरण पटेल**	26
04	कोविड-19 महामारी के दौरान बेरोजगार हुये युवकों कि मनोसामाजिक समस्याओं का अध्ययन (रीवा नगर के विशेष संदर्भ में) **शालिनी शर्मा, सुनीत कुमार द्विवेदी, आशीष सिंह पटेल**	34
05	कोविड-19 के दौरान कामकाजी महिलाओं पर घरेलू हिंसा का प्रभाव (रीवा नगर के विशेष संदर्भ में) **रुचि सिंह**	41
06	स्वास्थ्य पर राज्य के सार्वजनिक व्यय के प्रभाव का अध्ययन **मेघा डड्सेना, ए. के. पाण्डेय**	48
07	किन्नरों की सामाजिक स्थिति: एक समाजशास्त्रीय विश्लेषण **अंजू शुक्ला**	53
08	महिला अपराधिता "प्रकृति और पुनर्वास" **गजानन मिश्र**	58
09	भ्रष्टाचार (भारतीय परिप्रेक्ष्य में एक सामाजिक विश्लेषण) **रश्मि दुबे**	67
10	भ्रष्टाचार एवं कालाधन: एक वैश्विक समस्या का अध्ययन **अनिल द्विवेदी**	74
11	विभिन्न अवस्थाओं में बालक का विकास **रवेन्द्र राजपूत**	85
12	आर्टिकल 370 और कश्मीर समस्या **अर्चना दीक्षित**	101
13	कृषि वित्तीयकरण तथा रूपांतरण (सीधी जिले के विशेष संदर्भ में (1991 से 2010 तक) **सौरभी गुप्ता**	109
14	स्वतंत्रता-संग्राम में दलित नायकों का योगदान: एक समीक्षात्मक अध्ययन **आशीष कुमार**	122
15	महात्मा गांधी का समाज के उत्थान में भूमिका **सिद्धार्थ मिश्र**	129
16	अकबर की सेना में राजपूत सैन्य अधिकारियों का योगदान **मीनाक्षी सिंह कर्चुली**	133
17	अकबर एवं जहांगीर कालीन धार्मिक नीति: उत्तर भारतीय समाज के विशेष संदर्भ में **प्रियंका भारती**	138
18	मैहर तहसील का पुरातत्व **धीरजलाल विश्वकर्मा**	148

PRINCIPAL
Ramchandi College Saraipali
(Mahasamund)

UGC Journal No. (Old) 2138,
Peer-Reviewed Research Journal
Impact Factor 4.875, ISSN 0975-4083
Vol.- 22, Hindi Edition, Year-11, Oct.-March 2022

स्वास्थ्य पर राज्य के सार्वजनिक व्यय के प्रभाव का अध्ययन

• मेघा डड्सेना
•• ए. के. पाण्डेय

सारांश- कहा जाता है स्वास्थ्य ही मनुष्य का असली धन है। किसी राष्ट्र या समाज की अन्नति उसके नागरिकों के स्वास्थ्य पद निर्भर करती है। यदि वहाँ के निवासी स्वस्थ्य हैं तो निश्चित रूप से वह देश भी उन्नति के शिखर पर पहुँच सकता है। अच्छे स्वास्थ्य के अन्तर्गत शारीरिक शक्ति, क्षमता तथा सहनशीलता का पर्याप्त भंडार और मानसिक सन्तुलन भी आता है। छत्तीसगढ़ राज्य सरकार अपने राज्य के निवासियों के शारीरिक तथा मानसिक रूप से स्वस्थ्य बनाने के लिए सार्वजनिक व्यय के माध्यम से अनके सुविधाएँ तथा अनेक सेवाएँ प्रदान कर रही है। वर्ष 2011 तक प्रदेश में जन्मदर का स्तर 21 प्रति हजार बनाने का लक्ष्य रखा गया था, जोकि वर्तमान में 24.4 प्रति हजार है तथा शिशु मृत्युदर, जोकि वर्तमान में 46 प्रति हजार जीवित जन्म है, उसे 30 प्रति हजार जीवित जन्म तक लाने हेतु राष्ट्रीय जनसंख्या नीति एवं शिशु स्वास्थ्य संवर्धन कार्यक्रमों का पालन छत्तीसगढ़ राज्य में किया जा रहा है।

मुख्य शब्द- सार्वजनिक व्यय, शिशु मृत्यु दर, सामाजिक कल्याण, जन्म दर, मृत्यु दर, मातृत्व मृत्यु दर

परिचय- मनुष्य के जीवन में स्वास्थ्य का महत्वपूर्ण स्थान होता है। स्वास्थ्य व्यक्ति की अमुल्य निधि है। यह केवल व्यक्ति विशेष को प्रभावित नहीं करता बल्कि जिस समाज में वह रहता है उस सम्पूर्ण समाज को प्रभावित करता है। स्वस्थ्य मनुष्य ही अपने कर्तव्यों एवं उत्तरदायित्वों का निर्वाह कुशलातपूर्वक कर सकता है। यदि धन खो गया तो कुछ नहीं खोया, यदि चरित्र खो गया तो कुछ खो गया।

छत्तीसगढ़ राज्य की स्थापना 1 नवम्बर 2000 से 26वें राज्य के रूप में हुई है। छत्तीगसढ़ राज्य सरकार राज्य की स्थापना से ही अपने राज्य के निवासीयों के प्रति शतर्क एवं जागरूक हैं। सार्वजनिक व्यय के माध्यम से अपने राज्य की जनता को अनके स्वास्थ्य एवं चिकित्सा संबंधी सुविधाएं प्रदान कर रही है, अनेक स्वास्थ्य संबंधित योजनाएँ लागू कर रही हैं जैसे - (1) परिवार कल्याण एवं मातृत्व एवं शिशु कल्याण कार्यक्रम (2) जननी सुरक्षा योजना (3) राष्ट्रीय कुष्ट उनमूलन कार्यक्रम (4) पल्स

• शोधार्थी (पीएच.डी.) अर्थशास्त्र अध्ययनशाला, पंडित रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय रायपुर (छ.ग.)
•• प्राध्यापक, अर्थशास्त्र अध्ययनशाला, पंडित रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय रायपुर (छ.ग.)

PRINCIPAL
Ramchandi College Saraipali
Bagbahar), Mahasamund (C.G.

पोलियों अभियान (5) राज्य एड्स नियन्त्रण कार्यक्रम (6) आयुष्मान योजना (7) वात्सल्य योजना (8) संक्रामक रोग नियन्त्रण कार्यक्रम (9) नसबंदी कार्यक्रम (10) मुख्यमंत्री शहरी कार्यक्रम (11) स्वास्थ्य पंचायत योजना (12) मुख्यमंत्री बाल हृदय सुरक्षा योजना (13) निःशुल्क नमक प्रदाय योजना आदि।

सार्वजनिक व्यय सरकार का एक ऐसा अस्त्र है जिसके माध्यम से वह अर्थव्यवस्था में सुधार कर सकता है और लोककल्याणकारी राज्य के स्वरूप को अपना सकता है। सरकार सार्वजनिक व्यय के माध्यम से निःशुल्क चिकित्सा सुविधाएँ भी प्रदान कर करती है ताकि जो आर्थिक रूप से ईलाज करवाने में समर्थ नहीं है तथा जो गरीब हैं। सार्वजनिक व्यय के माध्यम से सरकार ने छत्तीसगढ़ में अब तक 27 जिला चिकित्साल्य, 31 सिविल डिस्पेंसरी, 158 सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र 801 प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र, 5167 उप स्वास्थ्य केंद्र आदि की स्थापना की है।

अध्ययन के उद्देश्य- प्रस्तुत अध्ययन के उद्देश्य निम्नलिखित हैं –

1. स्वास्थ्य पर किये गये सार्वजनिक व्यय एवं उसके संकेतकों की प्रवृत्तियों एवं परिवर्तनशीलता का अध्ययन करना।
2. शिशु मृत्युदर पर सार्वजनिक व्यय के प्रभावों का विश्लेषण करना।
3. अध्ययन के निष्कर्षों के आधार पर उपर्युक्त सुक्षाव प्रस्तुत करना।

शोध पध्दति-

(अ) आँकड़ों का संग्रहण- प्रस्तुत अध्ययन मुख्य रूप से द्वितीयक आँकड़ों पर आधारित है। स्वास्थ्य पर किये जाने वाले सार्वजनिक व्यय का शिशु मृत्यु दर से संबंधित आँकड़ों को राज्य सरकार द्वारा प्रकाशित छत्तीसगढ़ का आर्थिक सर्वेक्षण एवं राज्य की जनगणना रिपोर्ट से एकत्रित किया यगा है।

(ब) आँकड़ों का विश्लेषण- अध्ययन के उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए जिन सांख्यिकीय तकनीकियों का उपयोग किया गया है वह इस प्रकार है –

(1) संयुक्त वृद्धि दर- स्वास्थ्य पर किये गये सार्वजनिक व्यय तथा उनके संकेतक की प्रवृत्ति जानने के लिए संयुक्त वृद्धि दर का प्रयोग किया गया है। इसका सूत्र इस प्रकार है –

$$Y = AB^t$$

जहाँ –

$Y =$ प्रवृत्ति दर

$A =$ स्थिरांक

$B = (1+r)$, $r =$ संयुक्त वृध्दि दर (%में)

$T =$ समय

(2) विचरण गुणांक- अध्ययन अवधि में एकत्रित आँकड़ों में परिवर्तनशीलता की दर जानने हेतु विचरण गुणांक ज्ञात किया गया है। इसका सूत्र इस प्रकार है –

PRINCIPAL
Ramchandi College Saraipali
(Jailor), Mahasamund (C.G.)

$$C.V. = \frac{SD}{X} \times 100$$

जहाँ –

C.V. = विचरण गुणांक (% में)
S.D. = प्रमाप विचलन

$\overline{X}$ = समांतर माध्य

छत्तीसगढ़ राज्य में सार्वजनिक व्यय का स्वास्थ्य पर प्रभाव

वर्ष	स्वास्थ्य पर सार्वजनिक व्यय (करोड़ रू.)	शिशु मृत्युं दर (IMR)
2004 - 05	578.16	60
2005 - 06	721.34	63
2006 - 07	921.34	61
2007 - 08	1038.78	59
2008 - 09	1299.98	57
2009 - 10	1389.94	54
2010 - 11	1458.27	51
2011 - 12	1826.22	48
2012 - 13	2055.16	47
2013 - 14	2449.33	46

उपर्युक्त तालिका में छत्तीसगढ़ राज्य में सार्वजनिक व्यय का स्वास्थ्य पर प्रभाव का के आँकड़ों का विश्लेषण किया गया है। जिसमें छत्तीसगढ़ सरकार के द्वारा स्वास्थ्य पर किये गये सार्वजनिक व्यय का शिशु मृत्यु दर (Infant Mortality Rate) पर क्या प्रभाव पड़ता है। इन आकड़ों का अध्ययन करेंगे।

शिशु मृत्यु दर 0 से 1 वर्ष तक के बच्चों की मृत्यु हो जाती है वह शिशु मृत्यु के अन्तर्गत आता है। तालिका में वर्ष 2004-05 में 578.16 करोड़ रू. स्वास्थ्य पर व्यय किया गया है। 2007-08 में स्वास्थ्य पर किये गये सार्वजनिक व्यय बढ़कर 1038.78 करोड़ रू. हो गये हैं तथा वर्ष 2013-14 में बढ़कर 2449.33 करोड़ रू. हो गया है। अर्थात् छत्तीसगढ़ सरकार के द्वारा स्वास्थ्य पर किये गये सार्वजनिक व्यय में वृद्धि की प्रवृत्ति है तथा दूसरी ओर शिशु मृत्यु दर (IMR) के आँकड़े देखते हैं तो वर्ष 2004-05 में 60 प्रतिशत थी और 2008-09 में घटकर 57 प्रतिशत हो गई है। वर्ष 2013-14 में 46 प्रतिशत तक घट गया है, अर्थात् कम हो रहा है। शिशु मृत्यु दर में घटने की प्रवृत्ति देखने को मिलती है।

शिशु मृत्यु दर को बहुत से ऐसे तत्व हैं जो प्रभावित करते हैं माता का स्वास्थ्य प्रसव पूर्व एवं पश्चात् नवजात की देखभाल, बीमारी की दर, समान्य जीवन स्तर, पर्यावरण का स्तर आदि। छत्तीसगढ़ में शिशु मृत्यु दर को कम करने के लिए छत्तीसगढ़ में बहुत सारे प्रभावशाली कार्य किये गये हैं। छत्तीसगढ़ में शिशु स्वास्थ्य कार्यक्रम के कारण राज्य स्थापित होने से अब तक शिशु मृत्यु दर में तेजी से गिरावट दर्ज की गई है।

PRINCIPAL
Ramchandi College Saraipali
Bagaijor), Mahasamund (C.G.

निष्कर्ष- दर्शाये गये तालिका में स्वास्थ्य पर किये गये सार्वजनिक व्यय तथा शिशु मृत्यु दर के आँकड़ों की प्रवृत्तियों एवं परिवर्तनशीलता के आधार पर कह सकते हैं की स्वास्थ्य पर किये गये राज्य सरकार द्वारा सार्वजनिक व्यय में वर्ष वार निरन्तर वृध्दि होते जा रही है। तथा शिशु मृत्यु दर में वर्षवार कमी आते जा रही है। छत्तीसगढ़ सरकार के द्वारा अपने राज्य में किये गये सार्वजनिक व्यय का स्वास्थ्य पर अच्छा प्रभाव पड़ रहा है। शिशु मृत्युदर लगातार घट रही है तथा राज्य में निवास करने वाले व्यक्तियों के स्वास्थ्य में सुधार हो रहा है। सरकार द्वारा विभिन्न स्वास्थ्य सम्बन्धी जो योजनाएँ लागू कर रही है तथा चिकित्सालय की स्थापना कर रही है और नये-नये स्वास्थ्य सम्बन्धी तकनीकों की व्यवस्था कर रही है, इसका प्रभाव राज्य के निवासियों के स्वास्थ्य पर अच्छा प्रभाव डाल रहा है। जिससे गरीब से गरीब तपके तथा जनसमान्य को इसका लाभ मिल रहा है। सरकार निःशुल्क स्वास्थ्य सुविधाएँ लोगों को प्रदान कर रही है, जिससे की आर्थिक कमजोरी या गरीबी के कारण जो अपना इलाज नहीं करवा पाते हैं। वे अपना इलाज असानी से करवा लेते हैं। स्वास्थ्य सुविधाओं के माध्यम से सरकार अपना महत्वपूर्ण योगदान दे रही है। जिससे राज्य निरन्तर प्रगति की ओर अग्रसर है। जन्मदर तथा मृत्युदर में कमी आ रही है मातृत्व मृत्यु दर, बाल-मृत्युदर, शिशु मृत्यु दर भी कम होते जा रहा है। छत्तीसगढ़ में अभी भी कई स्थान ऐसे हैं जहाँ स्वास्थ्य सम्बंधी सेवाएँ तथा सुविधाएँ नही पहुँच पाई है जैसे आदिवासी जंगली इलाकों में जो क्षेत्र शहरों से बहुत दूर है दुर्गम स्थान है जहाँ यातायात की सुविधाएँ नहीं है ऐसे जगह में भी सरकार स्वास्थ्य सम्बन्धी सेवाएँ तथा सुविधाओं की व्यवस्था कर रही है।

प्रमुख सुझाव- प्रमुख सुझाव निम्नलिखित हैं -

1. राज्य सरकार को टेलीमेडिसिन सेवा का उपयोग करके सुदूर भागों एवं पिछड़े क्षेत्रों में स्वास्थ्य सेवा प्रदान करना चाहिए तथा उनके गुणवत्ता में सुधार करना चाहिए।
2. चिकित्सा की ऐलोपैथिक पद्धति के अलावा अन्य चिकित्सीय पद्धति पर भी जोर देना चाहिए जैसे- आयुर्वेद, योग, होम्योपैथिक आदि।
3. देखा गया है की सरकार के द्वारा शहरी क्षेत्रों में ही अच्छे स्वास्थ्य सेवाएँ प्रदान कर रही है। गाँव में तथा पिछड़े इलाकों में इन स्वास्थ्य सेवाओं का अभाव है। इसलिए सरकार को ग्रामीणों एवं दूरस्थ स्थानों में भी स्वास्थ्य सुविधाओं की व्यवस्था करनी चाहिए।
4. सार्वजनिक स्वास्थ्य सेवाएँ काफी सीमित है। बहुत कम बीमारियों का इलाज होता है जिससे लोग महंगी निजी स्वास्थ्य सेवाओं पर निर्भर रहने को मजबूर हैं। अच्छे से इलाज भी नहीं होता। सरकार को स्वास्थ्य सुविधाओं में वृद्धि करनी चाहिए।
5. सरकार को सभी को सम्पूर्ण एवं मुक्त स्वास्थ्य सेवाएँ (इलाज और बचाव) उपलब्ध करवानी चाहिए।
6. महत्वपूर्ण बीमारियों जैसे तपेदिक, मलेरिया या हैजा आदि के नियन्त्रण के लिए खास कार्यक्रम बनाने चाहिए।

PRINCIPAL
Ramchandi College Saraipali
(Bagaliori) Mahasamund (C.G.

7. लोगों के उन समूहों के लिए जो स्वास्थ्य की दृष्टि से खतरे में रहते हैं जैसे- गर्भवती महिलाएँ, बच्चे को जन्म देने के तुरन्त बाद महिलाएँ, खतरनाक उद्योगों में काम कर रहे बच्चे और अन्य लोगों के लिए खास तरह की स्वास्थ्य कार्यक्रम लागू करना चाहिए।
8. निवारक स्वास्थ्य सेवा चिकित्सीय शिक्षा का एक हिस्सा होना चाहिए।

संदर्भ ग्रन्थ सूची-

1. आर्थिक एवं सांख्यिकी संचालनालय छत्तीसगढ़ रायपुर, आर्थिक सर्वेक्षण वर्ष 2016-17, पृ. 254, 255.
2. आर्थिक एवं सांख्किी संचालनालय छत्तीसगढ़ रायपुर, आर्थिक सर्वेक्षण वर्ष 2019-20 अध्याय 15 स्वास्थ्य पृ. 338, 339.
3. Sonekar, B.L. The Indian Economic Association, The Indian Economic Journal, page no. 14
4. दत्त, रूद्र, सुन्दरम के.पी. एम. एस. चन्द एण्ड कम्पनी लि. नई दिल्ली, भारतीय अर्थव्यवस्था, पृ. 41, 42, 43
5. त्रिपाठी, संजय, उपकार प्रकाशन, आगरा-2, उपकार छत्तीसगढ़ वृहद् संदर्भ पृ. 149, 150, 151, 152
6. छत्तीसगढ़ समग्र 2014, छ.ग. जन सम्पर्क विभाग
7. डड्सेना, मेघा, छत्तीसगढ़ राज्य में सार्वजनिक व्यय का समाजिक क्षेत्र पर पड़ने वाले प्रभावों का मूल्यांकन: शिक्षा एवं स्वास्थ्य के विशेष संदर्भ में, अप्रकाशित लघु शोध, पृ. 16, 18, 19, 20.

PRINCIPAL
Ramchandi College Saraipali
(Bagaijor) Mahasamund (C.G.)